T.D.C. Part-II Paper-III

Dr. Rini Kumari
Department of Philosophy
Vaishali Mahila College
Hajipur

उचित और शुभ (Right and good) शुभ और अशुभ आदि प्रत्यय होता है। यदि किसी व्यक्ति का ऐच्छिक कर्म नैतिक आदर्श के अनुकूल हो तो उसे उचित या शुभ कहा जाता है और विपरित तो (right) उसे (good) अनुचित या अशुभ। हर प्रकार के निर्णय मे विशेष प्रत्ययों का व्यवहार होता है— सौन्दर्य निर्णय मे सुन्दरता-कुरूपता का, बौद्धिक निर्णय मे शुद्ध-अशुद्ध आदि का। इसी तरह नैतिक निर्णय के जैसे - उचित-अनुचित, शुभ-अशुभ, सर्वोच्च शुभ, अधिकार-कर्तव्य, पुण्य-पाप, गुण-दोष आदि मौलिक प्रत्यय है। अतः पहले इनके अर्थ का निश्चय करलेना चाहिए तभी इनका सही प्रयोग सम्भव है

उचित और शुभ ⇒ मानव-आचरण के नैतिक निर्णय मे उचित कर्म वह है, जो नैतिक नियमों के अनुकूल हो। अनुचित कर्म वह है जिसकी नैतिक नियमो से संगति न हो। दोनो से नैतिक नियमो का संकेत मिलता है, पर नैतिक नियम का उद्देश्य है सर्वोच्च शुभ की प्राप्ति। अतः उचित शुभ की प्राप्ति का साधन है। उचित कर्म वह है जो शुभ की प्राप्ति मे सहायक हो। अनुचित कर्म वह है, जो शुभ का कारण हो। शुभ लक्ष्य है और उसकी प्राप्ति का साधन उचित हुआ; उचित कर्मो से ही शुभ की प्राप्ति होती है।

'उचित' शब्द सदा साधन के लिए प्रयुक्त किया जाता है पर शुभ लक्ष्य और साधन दोनो के लिए। प्रत्येक सापेक्षिक शुभ किसी लक्ष्य की प्राप्ति का साधन होता है, अतः उसे उचित भी कहा जा सकता है। इस अर्थ मे जो शुभ है, वह उचित भी है और जो उचित है वह शुभ है। पर सर्वोच्च शुभ के लिए, जो किसी अन्य आदर्श की प्राप्ति का साधन नही होता, उचित प्रत्यय का प्रयोग नही होता है।